ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.981

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

समकालीन चित्रकला में किशनचन्द आर्यन जी का योगदान

डॉ. अनन्ता शॉडिल्य [1]
[1] मदर टेर्रेसा विमेंस पी. जी कॉलेज अलीगढ

शोध-सारांश
कला मनीषी, चित्रकार, मूर्तिकार, कला आलोचक, कला इतिहास लेखक, कवि मन के संवेदनशील छोटे से कद के आकर्षक व्यक्तित्व वाले किशनचन्द आर्यन पंजाब के वरिष्ठ कलाकार में से एक हैं कला परिवार में जन्मे आर्यन जी पर शैशवावस्था से ही कला के अंकुर विद्यमान थे। आपका जन्म सन् 1919 ई0 में अमृतसर (पंजाब) में हुआ। सन् 1934 में आपने अपनी स्कूली शिक्षा समाप्त की और सन् 1937 में एक व्यावसायिक कलाकार के रूप में अपनी जीवन-शैली आरम्भ की। आप स्वयं निर्मित कलाकार हैं जिन्हें कला के क्षेत्र में स्थान बनाने के लिए आरम्भ से ही बहुत संघर्ष करना पड़ा सन् 1941 में लाहौर में आपने अपनी कार्यशाला आरम्भ की आपको भारतीय ऐतिहासिक घटनाओं ने प्रेरित किया जिससे प्रभावित होकर आपने यूरोपियन तकनीक में ऐतिहासिक घटनाओं को यथार्थ शैली में परिदृश्य चित्रित किए आपके आरंभिक चित्र अधिकांश यथार्थ शैली में ही चित्रित है।
आर्यन जी ने सन् 1948 से सन् 1952 के मध्य एक विशिष्ट कला संदर्भ वाली "रेखा" नामक पुस्तक लिखी । जिसमें आलेखन और प्रतीकों पर विशेष कार्य किया साथ ही देवनागरी लिपि को लिपि बाध्य करने का विशेष कार्य किया। सन् 1953 से आप अपनी शैली में परिवर्तन लाए और आपने आधुनिक कला शैली में कार्य करना आरम्भ कर दिया सन् 1958 में आरएनजी ने यूरोप और इंग्लैंड की यात्रा भी की साथ ही ईरान, इराक अफगानिस्तान, जॉर्डन आदि क्षेत्रों में भी कला का अध्ययन किया जहां आपने भारतीय कला और संस्कृति की परंपराओं को खोजने का प्रयास किया। आप का मानना है कि बेरूत में भी बहुत कुछ भारतीय संस्कृति की छाप है।
सन् 1959 में आर्यन जी ने पुनः अपनी विधा में परिवर्तन किया और इस बार आपने धातु के तारों तथा टुकड़ों व धातु के विभिन्न आकारों द्वारा द्विआयामिक संयोजन तैयार किये जो बड़े ही कलात्मक व भावाभिव्यांजनात्मक है जिसमें उन्मेष नामक कृति में धातु को आग की लपटों के रूप में बड़े कलात्मक ढंग से अभिव्यंजित किया गया है। आपने कोलाज चित्रों में कागज, कपड़ा, धातु के तार, डोरी, माला आदि का प्रयोग बहुत ही सुनियोजित ढंग से किया है जिससे आपके संयोजन बड़े ही संयोजित हैं सन् 1961 में आपने कुछ और नवीन कार्य आरम्भ किया जिसमें लोककला व जनजातीय कला के कला प्रारूपों का संग्रह आरम्भ करना सम्मिलित है। साथ ही पुरातात्विक कलाकृतियों का संग्रह भी आर्यन जी के पास बहुतायत में है।
जिस कलाकार ने पूरी एक शताब्दी पार की हो, और जिसका सक्रिय कामकाज कोई 80 वर्ष की अवधि में फैला हो उसके कृतित्व को किसी एक आलेख में समेटना संभव नहीं है। ऐसे व्यक्तित्व के कामकाज का आकलन और स्मरण हर अवसर पर फलदायी है, और हम उसे चाहे जिस आकार प्रकार में रेखांकित करें वह निश्चय ही रचना विचार और कर्म के कुछ सूत्र हमें देगा और स्वयं अपने कामकाज के साथ, अपने जीवन के समांतर बहने वाली कई कला-धाराओं की जरूरी याद भी दिलायेगा। किशनचन्द आर्यन जी ने अपने

सामने कई पीढ़ियों को पनपते और फलते-फूलते देखा है, आधुनिक कला-कर्म के रचना संघर्ष से स्वयं गुजरे हैं, और अन्य बहुतेरे कलाकारों को उनके रचना संघर्ष में अपनी सह-अनुभूति दी हैं उनके आत्मिक बल को जरूरी धीरज बँधाया है और अन्य कई रूपों में भी उन्हें अपना समर्थन दिया है। ऐसा वे इसलिए भी कर सके हैं क्योंकि एक रचनाकार होने के साथ ही वह एक संवेदनशील कला प्रशासक और कला पारखी भी रहे हैं और देश-विदेश की अपनी बहुतेरी यात्राओं के कारण वह कई पीढ़ियों के कलाकारों के सीधे संपर्क में रहे है।

मुख्य शब्द – चित्रकला, किशनचन्द, योगदान

Cite This Article: डॉ. अनन्ता शॉडिल्य. (2019). "समकालीन चित्रकला में किशनचन्द आर्यन जी का योगदान." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 216-221. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592281.

प्रस्तावना -

सतत् परिश्रम, मौन अध्ययनरत रहने वाले, विलक्षण प्रतिभा एवं उत्कृष्ट कला कौशल के धनी श्री किशन चन्द जी का जन्म अमृतसर के कूचा अरदासियां में हुआ। जाने-माने चित्रकार लाला हरनाम दास के सुपुत्र किशन चन्द ने अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में कला के क्षेत्र में यथासंभव ज्ञान अर्जित किया। इसके बावजूद भी 16 वर्ष की आयु तक में अंधकार में मार्ग खोजते रहे। विरासत में मिले इस पैतृक गुण पर गर्वित आप इसे पेशे के रूप में अपनाना चाहते थे परंतु आपके पिता को आपका यह निर्णय नही भाया। संरक्षण के अभाव में आपको इस पेशे का भविष्य अंधकार में दिखाई देने लगा।

अविचलित आर्यन अपनी कला साधना में जुटे रहे। आपने कोई विधिवत कला शिक्षा व प्रशिक्षण नहीं लिया परंतु आपके अंदर दृढ़ विश्वास भरा था। आपको स्वयं व स्वयं द्वारा किसी भी कार्य का बीड़ा उठाने पर उसे सफलतापूर्वक पूरा किए जाने की क्षमता का विश्वास था। आपको लगा कि आपको अपने ज्ञान की सीमा के विस्तार की आवश्यकता है। तत्पश्चात् आपने सन् 1939 में अपनी कृतियों के संग्रह के साथ बम्बई का रुख किया। उस समय आप मात्र 20 वर्ष के थे।

आर्यन जी ने समस्त भारत का भ्रमण किया इस दौरान कला से संबंधित जो भी जानकारी आपको मिलती, उसे आत्मसात् कर लेते। सन् 1940 में आपने एक प्रसिद्ध नर्तक राम गोपाल जी का नृत्य प्रदर्शन देखा, जिनका आर्यन जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी विचारधारा एक ही प्रश्न के समाधान पर केंद्रित हो गई- ''यदि संगीत व भारतीय शास्त्रीय नृत्य धर्मसूत्रों पर आधारित हो सकते हैं तो पारंपरिक चित्रकारी, मूर्तिकला व वास्तुशिल्प कला का आधार धर्मसूत्र क्यों नहीं हो सकते हैं?''

किशन चंद जी प्रतिदिन घंटों ऐसी पुस्तकों की खोज में व्यतीत किए जो आपको दृश्यकला तथा मूर्तिकला की जानकारी दे सके। आपका यह कार्य सरल नहीं था और अंततः कई महीनों के पश्चात् आपको इस खोज में आंशिक सफलता मिली। आप कई मामलों में अगुआ रहे। आपने पारसी लिपि (जिसमें उर्दू लिखी जाती है) को अपनी तूलिका के माध्यम से एक नया रूप सन् 1943 में दिया। आपने 1952 में देवनागरी लिपि पर एक नया कलात्मक प्रभाव उस समय डाला जब ग्राफ पर आपने इस लिपि में प्रवाहित मोड़ दिए। उस समय जीविकोपार्जन के लिए आर्यन नाना प्रकार की पुस्तकों में चित्र बनाने का कार्य करने लगे थे। बालकथाओं से लेकर धार्मिक पांडुलिपियों जैसे विविध विषय वस्तुओं पर चित्र बनाने के कार्य में न केवल कल्पना का सहारा

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592281

लेना होता था बल्कि इसके लिए इतिहास की जानकारी संयम और पटुता की भी आवश्यकता होती थी। ''कल्पना द्वारा चित्र बनाना सरल कार्य नहीं था विशेषकर ऐतिहासिक चित्र। इसके लिए चित्रकार में संपूर्ण चित्र को अपने मानस पटल में कल्पना द्वारा सजीव करने की योग्यता होनी चाहिए।......... इस दिशा में वर्तमान सदी के विख्यात चित्रकार फोरचुनीनो मतानिया एन.आर.आई. आपके मुखय प्रेरणा स्त्रोत थे।

जन्म से इतालवी लेकिन लन्दन मे रहने वाले (सन् 1960 तक) फोरचुनीनो ने ऐतिहासिक घटनाओं को अपने विशिष्ट कौशल से चित्रित किया था। उनके चित्रों से आपको ऐतिहासिक चित्रकार बनने को प्रेरित किया तथा आपकी अंतर्जात क्षमता, दृढ़ संकल्प तथा निपुणता ने आपकी महत्वाकांक्षा को पूर्ण किया तथा इस निराशा भरे समय में आपकी प्रेरणा बने।''

पुस्तकों में चित्र बनाने के कार्य से आर्यन जी को विशेष लाभ हुआ। जिन पांडुलिपियों में आपने चित्र बनाए थे, वे प्रसिद्ध भारतीय एवं विदेशी लेखकों की रचनाएं थी। उन्हें पढ़ने से उनके ज्ञान में वृद्धि हुई तथा आपकी साहित्यक समझ का दायरा बढ़ा। परंतु एक ऐसी पुस्तक की रचना का विचार उनके मस्तिष्क से कभी दूर नहीं हुआ जो उनके समान कलाकारों का सही मार्गदर्शन कर सके। उर्दू-हिंदी सुलेखन में रुचि के कारण आपने एक पुस्तक संकलित की, जिसका शीर्षक था 'रेखा'। यह व्यवसायिक कलाकारों के लिए एक मार्गदर्शक पुस्तिका के रूप में प्रचलित हुई इस पुस्तक में श्री आर्यन ने मौर्य काल से आधुनिक काल तक देवनागरी लिपि के विकास का वर्णन किया है।

श्री आर्यन जी ने अनेकानेक पुस्तक आवरण चित्रण भी बनाये। ''मिंकूआर-ए-लक-लक'' लेखक हाजी लक लक की पुस्तक का पहला आवरण चित्रण था। इस चित्रण के छपने पर आपको अच्छी प्रसिद्धि मिली एवं तत्पश्चात् आपने इस क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य किया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय कला एवं जीवन यापन के लिए अत्यधिक समस्याएं आई। तदुपरांत आपको लाहौर छोड़कर अमृतसर आना पड़ा। सन 1941 में लाहौर में आपने अपनी कार्यशाला आरंभ की। इसी समय आर्यन जी ने ऐतिहासिक घटनों से प्रभावित होकर यूरोपियन तकनीक की याथार्थ शैली में परिदृश्य चित्रित कियें। प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली (1941) राजा पृथु अपनी खोज का जश्न मनाते हुये, मिस्र की रानी भारतीय आर्यन से घोड़े उपहार में लेती हुई, तक्षशिला के मार्ग में, गुप्त मंदिर में रात का जीवन, चिनाब दरिया कि वह जगह जहां सोहनी व महिवाल डूबे थे, नेशन बिल्डर आदि चित्र श्री आर्यन जी की भारतीय इतिहास में गहरी रुचि दर्शाते हैं जो अधिकांशतः यथार्थ शैली में चित्रित है।

तत्पश्चात् आर्यन की कला में आधुनिकीकरण आया। आधुनिक कला के चित्रण में आपको परंपरागत सोच से अलग किया तथा आपने आधुनिक कला के साथ लोककला तत्वों को मिश्रित कर चित्रण करना आरंभ किया। लोककला आपके मन को सुहाती थी। इसकी सादगी एवं सुंदरता ने आपके संवेदनशील कलाकार मन को प्रभावित किया। आपने इससे लय और रंग में पतंग बेचने वाला, हीर रांझा, दुल्हन, निहंग मदारी आदि चित्र बनाये हैं, जिनमें आपने लोककला आधुनिक से संवेदनशीलता को अति सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है।

श्री आर्यन जी की तूलिका ने जिस विषय की भी कल्पना कि उसे समृद्ध और दर्शनीय बना दिया। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आपका सशक्तरेखांकन एवं अनोखी कल्पनाशीलता तथा बहुमुखी प्रतिभा देश के लिए गौरव रही। आपके चित्रों में लालित्य, संतुलन एवं संयोजन हर बार नवीनता के लिए हुए मुखरित होता है। अतः दर्शक को एक के बाद और पुनः एक और विषय देखने की लालसा बनी रहती है। आप एक शांत, मृदुभाषी, सहृदय एवं प्रतिभाशाली कला सृजक रहे, जो चित्रकला के भंडार को अपनी कला सर्जन से भरने में सदैव सक्रिय रहे। आपने कला सर्जन के लिए स्वयं को किसी एक विषय तक सीमित नहीं रखा,

अपितु ऐतिहासिक विषय के साथ-साथ आधुनिक लोक, अमूर्त, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि पर अनगिनत कला सर्जन किए।

सन 1947 के दिसंबर महीने में आप दिल्ली आ गए। दिल्ली का कला माहौल आपको अच्छा लगा। ऐसा महसूस हुआ जैसे अब आप सही जगह पहुंच गये है। दरियागंज में आर्यन जी की कार्यशाला थी जो कलाकारों के मिलने का स्थान भी बनी। धनराज भगत, एन.एस. बेंद्रे, शान्ति दवे, सैलोज मुखर्जी व कई अन्य कलाकार आर्यन जी के साथ विचार-विमर्श कर 1948 में आई फैक्स के सदस्य बने परंतु शीघ्र ही आर्यन जी ने इसे त्याग दिया। तत्पश्चात पंजाबी कलाकारों के साथ 'पंजाबी चितेरे' नाम का समूह बनाया। इस समूह में देश के कई और प्रांतों से आए कलाकारों ने सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की तो 'पंजाबी चितेरे' का नाम बदलकर 'दिल्ली शिल्पी' रख दिया गया। जो कुछ समय पश्चात दिल्ली शिल्पी चक्र के नाम से जाना गया।

सन् 1958 में आर्यन जी ने यूरोप, इंग्लैंड व मध्य पूर्वी देशों की यात्रा की। यह यात्रा आपके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इस यात्रा ने आपको संग्रहालयों, कला दीर्घाओं, ऐतिहासिक स्थलों और स्मारकों को देखने का अवसर दिया। आपने अनेक जाने-माने चित्रकारों से भेंट की तथा कला पर चर्चा की। वापस लौटकर आपने प्राचीन पारंपरिक आधुनिक, अलंकारिक, अमूर्त आदि का मंथन कर अपने अंदर के भाव को नए रूप में प्रकट करने के लिए नए आकार एवं नए माध्यम की शुरुआत की।

तत्पश्चात आर्यन जी ने धातु टुकड़े, लोहे एवं उससे बनी भांति- भांति की जालियों को अपने कला-सर्जनत में प्रयोग किया। इस माध्यम में आपने द्विआयामी, त्रिआयमी कला चित्रों का सर्जन किया। लगभग 10 वर्ष तक आप इसी माध्यम में कार्यरत रहे एवं अपने भावों को प्रकट करते रहे। प्रसिद्ध कला विद्वान डॉ मुल्क राज आनंद, प्रसिद्ध कला समीक्षक ए.एस. रमन व प्रसिद्ध कवि ओ. पेज ने आर्यन की इस कला की प्रशंसा की।

इसी श्रृंखला में बनायी गयी एक कलाकृति 'पोट्रेट ऑफ गॉड' को ललित कला अकादमी, नई दिल्ली की ओर से 1964 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। यह कलाकृति अमूर्त होते हुए भी फिगरेटिव है। जालियों के अलग-अलग टुकड़ों को आपने बड़े ही सहज-स्वाभाविक सादे ढंग से संजोया है। कल्पना और कलात्मक सुर में रंगी यह सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है। प्रत्येक कला प्रेमी इस ''भगवान की मूरत'' की अपनी सोच और विश्वास के अनुसार कल्पना करता है 'पोट्रेट ऑफ एन आर्ट क्रिटिक, मेटल कन्सट्रेक्शन, एफिनिटी, द वॉल, पोलुएटेड मून आदि कलाकृतियां आर्यन जी की इस शैली को प्रस्तुत करती हैं। ये कलाकृतियां अमूर्त होते हुए भी सांकेतिक हैं, जिनसे कला प्रेमी को संवाद करने में कोई कठिनाई नहीं आती।

श्री आर्यन जी ने मूर्ति शिल्प का भी निर्माण किया जिनसे शीर्षक- मैन एंड वूमेन, द होर्स, द बैगर, कॉकटेल, इन्टल्एचुअल आदि मूर्तिशिल्प प्रमुख है। इन्हे बनाने में आपने लोहे का प्रयोग किया है जो कलात्मक व भावाभिव्यंनात्मक हैं। इसी सोच और संवेदनशीलता में आपने कुछ पेपर कोलाज भी बनाये। कोलाज चित्र में आपने कागज, कपड़ा, धातु के तार, डोरी माला आदि का प्रयोग बहुत सुनियोजित ढंग से किया है। तत्पश्चात आर्यन ने वैदिक विषयों पर मिश्रित माध्यम में चित्र बनाए शीर्षक अग्नि, थर्सटी इन द लैंड ऑफ रिवर्स, कम्पोजाइट कल्चर राइडिंग आवर हिंदूनिज्म आदि चित्र हैं जो प्रतीकात्मक हैं।

श्री आर्यन जी ने सन् 1939 से सन् 1991 तक चंडीगढ़, अमृतसर, दिल्ली, मुंबई, अफगानिस्तान, बगदाद और बेरूत में अपने अनेक एकल प्रदर्शनियाँ कि। आईफैक्स नई दिल्ली ने श्री आर्यन जी को कला व कला साहित्य में दिए योगदान के लिए 'कला विभूषण' से सम्मानित किया तथा दिसंबर 2000 में राष्ट्रीय म्यूजियम में आपका

अभिनंदन भी किया। सन 1970 में श्री आर्यन जी का रुझान कला इतिहास की खोज की ओर हो गया। कला-इतिहास हेतु आपने देश-विदेश का भ्रमण किया एवं कला का आधुनिक सर्वेक्षण किया। आर्यन जी ने हिमालय प्रदेश की भूली-बिसरी लोक काशीदाकारी को उजागर किया। उसका संचय और वर्गीकरण किया। पंजाब कला एवं संस्कृति में आपकी विशेष रूचि थी। आपने पंजाब शीर्षक को लेकर तीन पुस्तकों-कल्चर हैरिटेज ऑफ पंजाब, वॉल पेंटिंग ऑफ पंजाब एवं पंजाब पेंटिंग 1841-1941 का लेखन कार्य किया, जिसमें पंजाब की कला और संस्कृति के अनजाने पक्षों को उजागर किया है। आपने लगभग 23 कला पुस्तकों का लेखन कार्य किया जो भारतीय कला जगत को समर्पित है।

युवावस्था से जनजाति एवं लोककला से प्रेम के कारण श्री आर्यन जी ने व्यगित रूप से देश के कोने-कोने में जाकर कला के उत्तम कार्यों को एकत्र किया एवं सन 1950 से 1985 तक लगभग 400000 सांस्कृतिक कला छाया चित्रों का संग्रह किया। जब आपके पास जनजाति एवं लोक काल का अच्छा संग्रह हो गया तब आपने गुड़गांव में 1986 में 'होम आफ फोक आर्ट की स्थापना की।

अपने ढंग का यह ऐसा प्रथम संग्रहालय बना जिसमें एक ही छत के नीचे लोककला, आदिवासी व उपेक्षित कला वस्तुएं देख सकते हैं। संग्रहालय में प्रवेश करने पर वहां प्रदर्शित वस्तुओं की विविधता विस्मित कर देती हैं तथा जो दर्शक को अतीत काल के बारे में जानने और वर्तमान से भूले बिसरे संबंधों को स्थापित करने का प्रयास कराती हैं।

संग्रहालय में संग्रहित कलाकृतियों में काष्ठ शिल्प की वस्तुयें, लोहे के बर्तन, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और बंगाल की उत्कृष्ट कसीदाकारी, ब्रिटिश काल के प्रारंभिक दिनों के अश्ममुद्रण, पक्की मिट्टी की लघु मूर्तियां, कर्मकांड और धार्मिक कला वस्तुएं, तांत्रिक चित्र और अन्य वस्तुएं जैसे लकड़ी पर असाधारण नक्काशी, धातु फलक और छोटी कलाकृतियां हैं। एक इंच से लेकर आदमकद से भी बड़ी चौंका देने वाली है। जब यहां कोई भी कक्ष से गुजरता है तो कोई न कोई नया मोहक और रंगीन रूप में सामने आ जाता है। दुर्भाग्यवश 15 जनवरी सन् 2002 में श्री किशनचन्द्र आर्यन अपनी रचनाओं को आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़ कर संसार से विदा ले चले गये।

निष्कर्ष –

श्री किशन चन्द आर्यन जी की उपस्थिति स्वयं समूचे भारतीय कला जगत के लिए प्रेरणाप्रद रही है आप एक बड़े कला परिवार के बुजुर्ग के रूप में अपनी भूमिका का सत्त निर्वाह करते रहे है। कलाकार चाहे वरिष्ठ हो या युवा में समान रूप से सब की प्रदर्शनी में अपनी उपस्थिति दर्ज करते रहे है। कला आयोजनों में उनकी भागीदारी के लोग आग्रही रहे है। आपने होम ऑफ फोक आर्ट संग्रहालय को बनाकर समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके लिए आप की जितनी प्रशंसा की जाए, पर्याप्त नहीं होगी क्योंकि होम ऑफ फोक आर्ट की स्थापना में आपने अथक प्रयास किए जिसके फलस्वरूप भारत की भावी पीढ़ी को सांस्कृतिक परंपरा की क्रमबद्ध जानकारी मिलती है और वह भारत की विविधता और समृद्धि पर गर्वित हो सकते हैं।

सन्दर्भ

[1] आर्यन, किशन चन्द : साधना कला यात्रा
[2] सिन्हा, त्यौहार राम मनोहर : समकालीन कला
[3] वर्मा, सविता : शोध ग्रन्थ

[4] फ्राइ, रोजन : विजय एण्ड डिजानइन
[5] कु. भावसार, कु. वीरवाला : सौन्दर्यानुभूति का क्षेत्र लेख
[6] आकृति
[7] श्रीमती कुमावत, हेमलता : आकृति सामाचार बुलेटिन
[8] आर्य, विनोद कुमार : भारतीय कला की कहानी
[9] टालस्टाय : व्हाट इज आर्ट